मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें -

आवश्यक सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 द्वारा आयोजित जून 2010 की परीक्षा के प्राप्तांक (परीक्षा परिणाम) संबंधित अभ्यर्थियों को डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। कदाचित् डाक की गड़बड़ी से जिन्हें नहीं मिले हों, वे पोस्टकार्ड द्वारा जानकारी भेजकर मंगवा लेवें।

नोट : 1. मुक्त विद्यापीठ की परीक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन किये गये हैं। इसके अनुसार अब सत्र प्रतिवर्ष जनवरी से प्रारम्भ होकर दिसम्बर तक चलेगा। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा जून माह एवं द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा दिसम्बर माह में ली जावेगी।

2. इसके अनुसार इस वर्ष दिसम्बर में द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा आयोजित की जायेगी; अत: सभी छात्र इसी के अनुसार तैयारी करें। - ओ.पी. आचार्य (विभागाध्यक्ष)

शाकाहार दिवस संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर-11 में श्री महावीर दि. जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा शाकाहार दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित खेमचंदजी शास्त्री के निर्देशन में शाकाहार विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें पाँच वर्गों में लगभग 85 बच्चों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में **शिशु वर्ग प्रथम** में हितांश जैन प्रथम, लहन जैन द्वितीय एवं कु.तनिष्का व दिव्य जैन तृतीय रहे; **शिशु वर्ग द्वितीय** में कु.लिपि जैन प्रथम, नीलांश जैन द्वितीय एवं शीर्ष जैन व तनिष जैन तृतीय रहे; **बाल वर्ग प्रथम** में कु.ऐशा जैन प्रथम, कु.गर्विता जैन द्वितीय एवं महेशपुरी गोस्वामी तृतीय स्थान पर रहे; **बाल वर्ग द्वितीय** में कु.हर्षिता जैन प्रथम, उत्सव जैन द्वितीय एवं हर्षिल जैन, भव्य जैन व चर्चित जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया; **किशोर वर्ग** में कु. रूपाली जैन प्रथम, कु.दिव्यांशा जैन व कु.रविना जैन द्वितीय एवं सहज कोडिया व ग्रेसिम जैन तृतीय स्थान पर रहे।

(पृष्ठ 26 का शेष ...)

- ऐसी मान्यता से तो जड़वाद का प्रचार हो जायेगा, व्यवहार का उत्थापन हो जायेगा, निमित्त और क्रियाकाण्ड उड़ जायेगा; इसप्रकार चतुर्दिक विरोध करके अपने शुद्धस्वभाव का नकार करते हैं; उन जीवों के जूनागढ़ के राजा की भाँति दिन फिरे हुए हैं, इसलिए उनका संसार चालू है।

मुनिराज करुणा से कहते हैं कि भाई! ऐसे शुद्धस्वभाव की रुचि कर तो धर्मदशा प्रकट होकर केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी का तू पति होगा। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 327 अंक : 3

अब हम अमर ...

अब हम अमर भये न मरेंगे।। टेक।।
तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरेंगे।।
।। अब हम अमर... ।।1 ।।
उपजै मरै काल तैं प्रानी, तातैं काल हरेंगे।
राग - दोष जग बंध करत हैं, इनको नाश करेंगे।।
।। अब हम अमर... ।।2 ।।
देह विनाशी मैं अविनाशी, भेद -ज्ञान पकरेंगे।
नासी जासी हम चिरवासी, चोखे हों निखरेंगे।।
।। अब हम अमर... ।।3 ।।
मरे अनन्त बार बिन समझें, अब सब दुख बिसरेंगे।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरें सुमरेंगे।।
।। अब हम अमर... ।।4 ।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

वीतराग-विज्ञान मंगलरूप है और तीनों लोक के जीवों को वही सारभूत है, उसी के द्वारा पंचपरमेष्ठी पद की प्राप्ति होती है। ऐसे वीतराग-विज्ञान को मंगलरूप से नमस्कार करके पण्डित दौलतरामजी ने इस छहढाला ग्रन्थ का प्रारंभ किया है। जीव ने चार गति में कैसे-कैसे दु:ख भोगे, यह पहली ढाल में दिखाया। उन दु:खों का कारण मिथ्याश्रद्धा, मिथ्याज्ञान और मिथ्या-आचरण है; अत: इनको पहचानकर इन मिथ्यात्वादि को शीघ्र छोड़ और आत्महित के सुपथ में लग - ऐसा दूसरी ढाल में कहा।

अब उस आत्महित का पथ दिखाते हैं। आत्महित का पथ कहो या मोक्ष का मार्ग कहो, उसका वर्णन इस तीसरी ढाल में करते हैं, इसमें भी सम्यग्दर्शन का वर्णन मुख्य है।

देखो, अब इसमें मोक्षमार्ग के वर्णन का प्रारंभ हो रहा है। इसमें संक्षेप में भी बहुत-सी बातें समझाई हैं; जीव को सुखी होने के लिए यह प्रयोजनभूत बात है।

आत्मा का हित क्या है ? सुख होना; वह सुख कैसा है ? आकुलता से रहित अर्थात् निराकुलता ही सुख है। मोक्षदशा में आकुलता का अभाव है; अत: वही आत्मा को हितरूप है, इसलिए जीव को उस मोक्ष के मार्ग में लगना चाहिए।

मोक्ष का मार्ग क्या है ? सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र मोक्ष का मार्ग है, उस मार्ग का दो प्रकार से विचार करो अर्थात् ज्ञान करो। जो सत्यार्थरूप है, वह तो निश्चय मोक्षमार्ग है और उसमें जो कारणरूप या निमित्तरूप है, वह व्यवहार मोक्षमार्ग है।

देखो ! यहाँ दो प्रकार के मोक्षमार्ग विचारने के लिए कहा है; परन्तु उनमें सत्यार्थरूप तो एक निश्चय को कहा है अर्थात् निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही सच्चा मोक्षमार्ग है और व्यवहार तो उपचार है, वह सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है।

मोक्ष के मार्ग दो नहीं, अपितु एक ही है। इस संबंध में पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में बहुत अच्छा स्पष्टीकरण किया है। वे कहते हैं कि -

''शुद्ध आत्मा का अनुभव ही सच्चा मोक्षमार्ग है।

व्रत-तपादि कोई मोक्षमार्ग तो नहीं हैं, परन्तु निमित्तादि की अपेक्षा लेकर उपचार से उनको मोक्षमार्ग कहा जाता है, अत: उसे व्यवहार कहा है।

इसप्रकार भूतार्थ-अभूतार्थ मोक्षमार्गपने से उसको निश्चय-व्यवहार कहा है - ऐसा ही मानना अर्थात् भूतार्थ मोक्षमार्ग को तो निश्चय मोक्षमार्ग कहा और अभूतार्थ को व्यवहार कहा - ऐसा ही जानना; परन्तु ये दोनों ही सच्चे मोक्षमार्ग हैं और दोनों उपादेय हैं - ऐसा मानना, वह तो मिथ्याबुद्धि ही है।

तो क्या करना ? उसका समाधान करते हुए पण्डितजी जैनसिद्धान्त का रहस्य समझाते हैं कि 'निश्चयनय के द्वारा जो निरूपण किया हो, उसको तो सत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान अंगीकार करना तथा व्यवहारनय के द्वारा जो निरूपण किया हो, उसको असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोड़ना।' निश्चय के द्वारा शुद्ध ज्ञानघनस्वभाव की महिमा में लीन होना, सो मोक्ष का कारण है।''

यहाँ मोक्षमार्ग का दो प्रकार से विचार करने के लिए कहा, उसमें भी यह नियम समझ लेना चाहिए कि सच्चा मोक्षमार्ग एक ही है। इसलिए यहाँ पहले ही छन्द में पण्डित दौलतरामजी ने कहा - **'जो सत्यारथरूप सो निश्चय'** निश्चय मोक्षमार्ग ही सच्चा मोक्षमार्ग है। पण्डित टोडरमलजी ने भी यही कहा है कि 'मोक्षमार्ग तो दो नहीं हैं; किन्तु मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार से है। जहाँ सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्गरूप से निरूपित किया है, वह निश्चय मोक्षमार्ग है तथा जो मोक्षमार्ग तो नहीं है; परन्तु मोक्षमार्ग का निमित्त है अथवा सहकारी है, उसको उपचार से मोक्षमार्ग कहा जाये तो वह व्यवहार मोक्षमार्ग है। निश्चय-व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है अर्थात् सच्चा निरूपण है, सो निश्चय और उपचार निरूपण है, सो व्यवहार।

इसप्रकार निरूपण की अपेक्षा से दो प्रकार जानना; परन्तु एक निश्चय मोक्षमार्ग है तथा एक व्यवहार मोक्षमार्ग है - ऐसे दो मोक्षमार्ग मानना मिथ्या है। निरूपण दो प्रकार से है; परन्तु मार्ग तो एक ही है। निश्चय मोक्षमार्ग एक ही सच्चा मोक्षमार्ग है। श्री कुन्दकुन्दस्वामी ने समयसार में जगह-जगह पर यह बात स्पष्ट समझायी है कि भूतार्थस्वभाव के आश्रय से ही जीव सम्यग्दृष्टि होता है; निश्चय के आश्रय से मुनिवर मोक्ष को साधते हैं। अहो, समयसार में तो आचार्यदेव ने मोक्ष का मार्ग खोलकर रखा है। हजारों शास्त्रों का भण्डार समयसार में भरा है।

वीतरागी देव-गुरु-धर्म की श्रद्धा, नव तत्त्व का ज्ञान और व्रत समितिरूप चारित्र - ऐसे व्यवहार को निश्चय का कारण कहा; परन्तु इसका अर्थ ऐसा न समझना कि निश्चय के ज्ञान बिना अकेला व्यवहार करते-करते वह निश्चय मोक्षमार्ग का कारण हो जायेगा। निश्चय रहित व्यवहार में तो कारण का उपचार भी नहीं आता। कार्य के बिना कारण किसका ? निश्चयपूर्वक व्यवहार को उपचार से कारण कहा जाता है और शुद्ध आत्मा के आश्रय से जो सम्यक् रुचि, ज्ञान व लीनता हुई, वह सच्चा मोक्षमार्ग है। ऐसे मोक्षमार्ग को जानकर हे जीव ! उसकी आराधना में अपने आत्मा को जोड़। आत्मा के आश्रित रत्नत्रय से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, उसी में निराकुल सुख है और वही आत्मा का कल्याण है।

'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः' यह इसका वर्णन है। मोक्ष क्या है ? और मोक्ष का उपाय क्या है ? ये दोनों बातें एक श्लोक में दिखा दी हैं। आत्मा का हित क्या है ? मोक्ष। सर्वार्थसिद्धि में पहले सूत्र के उपोद्घात में इसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

''जिसको अपने हित की भावना जागृत हुई है - ऐसा कोई निकट भव्य मुमुक्षु जीव रमणीय वन में गया और वहाँ निर्ग्रन्थ मुनिराज से विनयपूर्वक मोक्ष का मार्ग पूछा। कैसे हैं मुनि ? जो आत्मा के ध्यान में बैठे हैं और बिना बोले वीतरागी मुद्रा से ही मानो मोक्ष का मार्ग दिखला रहे हैं - ऐसे मुनिराज के निकट जाकर शिष्य विनय से पूछता है - प्रभो ! आत्मा का हित क्या है ?

श्रीगुरु प्रसन्नता से उसे समझाते हैं कि हे वत्स ! आत्मा का हित मोक्ष है।

तब शिष्य फिर से पूछता है कि प्रभो ! उस मोक्ष का उपाय क्या है ?

उसके उत्तर में मोक्षशास्त्र का पहला सूत्र कहा है कि ह्न **''सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।''**

इस तीसरी ढाल के पहले छन्द में भी यही बात की है कि ह्न

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता बिन कहिए।
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।।

आत्मा का निराकुल स्वभाव ही सुख है; आत्मा के पूर्ण अतीन्द्रियसुख का नाम मोक्ष है और वही आत्मा का हित है। लोग बाह्य में जो सुख मानते हैं, वह सुख नहीं है; बाह्यपदार्थ की ओर वृत्ति तो आकुलता है, दुःख है। पापराग (अशुभ राग) में आकुलता है एवं पुण्यराग (शुभ राग) में भी आकुलता ही है, अतएव दुःख ही है, उसमें सुख नहीं है। पाप और पुण्य दोनों प्रकार की आकुलता से रहित जो सहज ज्ञान-आनन्दमय आत्मस्वभाव है, उसमें एकाग्रता द्वारा होने वाला शांत-निराकुल-चेतनरस का अनुभव ही सुख है। ऐसे सुख की पूर्ण प्राप्ति ही मोक्ष है। उसको पहचानकर उसके मार्ग में लगना चाहिए।

वह मोक्ष का मार्ग क्या है ? तो कहते हैं कि -

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव-मग सो द्विविध विचारो।
जो सत्यारथरूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।

पुण्य एवं पाप दोनों में आकुलता होने से उनको मोक्षमार्ग में से निकाल दिया है। सम्पूर्ण निराकुल सुख के अनुभवस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग भी निराकुलभावरूप ही है। सच्चा मोक्षमार्ग निराकुल अर्थात् रागरहित ही है। उसके साथ होने वाले रागसहित श्रद्धा-ज्ञान-आचरण को मोक्षमार्ग का कारण कहना व्यवहार है। व्यवहार-रत्नत्रय सत्यार्थ मोक्षमार्ग नहीं है, नियमरूप मोक्षमार्ग नहीं है। राग से पार आत्मा के स्वभाव में प्रविष्ट होकर होने वाली सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र ही निश्चय मोक्षमार्ग है, वह सत्यार्थ मोक्षमार्ग है, मोक्ष के लिए वह नियम से करने योग्य कार्य है; अतः कहा है कि **'शिवमग लाग्यो चाहिए।'** शुभराग में लगे रहने के लिए नहीं कहा; परन्तु आत्मा के सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान-चारित्ररूप निश्चय मोक्षमार्ग में लगना कहा; उसी में आत्मा का हित व सुख है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

जीव के विभावस्वभाव नहीं है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 39 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा।।३९।।

अरे विभाव स्वभाव हर्षाहर्ष मानपमान के।
स्थान आतम में नहीं ये वचन हैं भगवान के।।३९।।

जीव को वास्तव में स्वभावस्थान (विभावस्वभाव स्थान) नहीं हैं, मानापमान भाव के स्थान नहीं हैं, हर्षभाव के स्थान नहीं हैं या अहर्ष के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

शुद्धस्वभाव में अशुभपरिणति, अशुभकर्म और अहर्षस्थान का अभाव है।

पुनः शुद्धजीवास्तिकाय के अशुभपरिणति का अभाव होने से अशुभकर्म नहीं है, अशुभकर्म का अभाव होने से दुःख नहीं है और दुःख का अभाव होने से अहर्ष स्थान नहीं है।

जीव अपने स्वभाव को चूककर पर्याय में काम, क्रोध, शोकादि के भाव करता है; किन्तु शुद्धात्मा में तो उनका अभाव है, इसीकारण अशुभकर्म का भी अभाव है। अशुभकर्म नहीं होने से उसकी तरफ के (दिलगीरी) दुःख का भाव भी नहीं है। यद्यपि पर्याय में दिलगीरी का (दुःख का) भाव होता है; तथापि उसीसमय शुद्धस्वभाव में दिलगीरी का स्थान नहीं है। दुःख पर्याय कर्म के कारण नहीं है; अपितु अपने अपराध के ही कारण है। इसप्रकार निर्णय करने के पश्चात् वे सभी भाव शुद्धस्वभाव में नहीं हैं - ऐसा कहकर पर्यायदृष्टि छुड़ाई है और द्रव्यदृष्टि कराई है।

अब ३९वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं -

(शार्दूलविक्रीडित)

प्रीत्यप्रीतिविमुक्तशाश्वतपदे निःशेषतोऽन्तर्मुख-
निर्भेदोदितशर्मनिर्मितवियद्बिंबाकृतावात्मनि ।
चैतन्यामृतपूरपूर्णवपुषे प्रेक्षावतां गोचरे
बुद्धिं किं न करोषि वांछसि सुखं त्वं संसृतेर्दुःकृतेः ॥५५॥

(रोला)

चिदानन्द से भरा हुआ नभ सम अकृत जो।
राग-द्वेष से रहित एक अविनाशी पद है॥
चैतन्यामृत पूर चतुर पुरुषों के गोचर।
आतम क्यों न रुचे करे भोगों की वांछा॥५५॥

श्लोकार्थ : जो प्रीति-अप्रीति रहित शाश्वत पद है, जो सर्वथा अन्तर्मुख और प्रगट प्रकाशमान ऐसे सुख का बना हुआ, नभमण्डल समान अकृत है, चैतन्यामृत के पूर से भरा हुआ जिसका स्वरूप है, जो विचारवन्त चतुर पुरुषों को गोचर है - ऐसे आत्मा में तू रुचि क्यों नहीं करता और दुष्कृतरूप संसार के सुख की वांछा क्यों करता है?

शुद्ध आत्मा शाश्वत है, सर्वथा अन्तर्मुख है, प्रकट प्रकाशमान है, चैतन्यामृत से भरपूर है।

जिसे आत्मा में धर्म प्रकट करना हो, उसे आत्मा कैसा है? - यह जानना चाहिए।

(१) आत्मा प्रीति-अप्रीति रहित त्रिकाल टिकनेवाला शुद्धपदार्थ है।

(२) आत्मा सर्वथा अन्तर्मुख है अर्थात् किन्हीं पुण्य-पाप के भावों से अथवा पर्याय के आश्रय से ज्ञात हो - ऐसा नहीं है। चैतन्य शुद्धस्वभाव को रुचि में लेने से ही वह ज्ञात होता है।

'सर्वथा अन्तर्मुख' कहा - उसका अर्थ यह है कि पर्याय में पुण्य-पाप होने पर भी उनसे वह जानने में नहीं आता; अपितु स्वभाव सन्मुख झुकने से ही जानने में आता है; इसप्रकार अनेकान्त है। पुनः 'प्रकट प्रकाशमान' ऐसे आनन्द से परिपूर्ण है। गाथा में 'प्रकट' और 'बना हुआ' ये दो शब्द प्रयोग किए गए हैं अर्थात् जो नया भाव प्रकट होता है, उसकी बात यहाँ नहीं समझना; किन्तु त्रिकाली शुद्धस्वभाव ऐसे का ऐसा अर्थात् ज्यों का त्यों प्रकाशमान है, उसे समझना।

कोई **प्रश्न** कर सकता है कि साधक जीव को सर्वथा अन्तर्मुख क्यों कहा?

सर्वथा अन्तर्मुख तो केवलज्ञान प्रकट होने पर ही हो सकता है?

समाधान : साधक जीव को अनेकान्त का ज्ञान वर्तता है। पर्याय में राग-द्वेष का बाधकपन वर्तता है, निमित्तरूप में कर्म हैं और आंशिक शुद्धता भी साथ में ही वर्त रही है। यद्यपि चारित्र अपेक्षा से आंशिक बहिर्मुखता है; तथापि दृष्टि अपेक्षा से तो बहिर्मुखता किंचित् भी नहीं है। अल्पराग के समय भी सर्वथा अन्तर्मुखता का नगाड़ा बज रहा है, उसी के गीत गाता है, अल्पबहिर्मुखता गौण हो जाती है। सर्वथा अन्तर्मुख शुद्धस्वभाव के गीत सुनकर जो हाँ करेगा, स्वीकार करेगा, वह मुक्ति के समीप आयेगा। श्रीसर्वज्ञ के मुख से निर्गत वाणी में गणधरदेव द्वादशांग एवं चतुर्दशपूर्व की रचना करते हैं उसमें तथा मुनिगण शास्त्र लिखते हैं उनमें, यही भनकार है, अन्य कुछ नहीं है ।

(३) पुनः शुद्ध आत्मा कैसा है ? जैसे आकाश को किसी ने बनाया नहीं, वैसे ही आत्मा को भी किसी ने नहीं बनाया। आत्मा अन्तर्मुख प्रकट अतीन्द्रिय सुख का पिण्ड है, स्वयंसिद्ध शाश्वत है। लोकाकाश के समान क्षेत्र अपेक्षा और ज्ञानभाव की अपेक्षा से व्यापक है। अपने सम्पूर्ण चैतन्य में व्याप्त है, उसी में रहकर सर्व पदार्थों को जानता है।

आत्मा अनादि का है, इसलिये पुराना हो गया हो - ऐसा नहीं है, अपितु वैसे का वैसा ही ताजा है। नया नहीं है, उसी भाँति पुराना भी नहीं होता।

(४) आत्मा में चैतन्य अमृत भरा पड़ा है। बाहर का शरीर उसका शरीर नहीं, पुण्य-पाप का भाव उसका शरीर नहीं तथा एक समय की पर्याय जितना भी वह नहीं; वह तो त्रिकाल चैतन्य पूर से भरा-पूरा है। ऐसा उसका स्वरूप है - अर्थात् वह ज्ञानशरीरी है, चाहे जितनी ज्ञानपर्यायें प्रकट हों तो भी उसमें कभी प्रविष्ट नहीं होती।

(५) जो विचारवंत चतुर पुरुषों को गोचर है। चाहे जिस काल में, चाहे जिस क्षेत्र में हो तथापि शुद्धस्वभाव तो ज्यों का त्यों पड़ा है, अतः वही एक शरण लेने योग्य है। पुण्य-पाप अथवा अधूरी पर्याय शरण लेने योग्य नहीं है। अतः जो विचार करता है और शुद्धस्वभाव का निर्णय करता है उस सम्यग्दृष्टि जीव को शुद्धस्वभाव जानने में आता है।

यहाँ कोई प्रश्न करे कि शुद्धस्वभाव तो केवलज्ञान के आश्रय से भी जानने में नहीं आता ऐसा पहले कहा था और यहाँ सम्यग्दृष्टि को गोचर है ऐसा कहा - सो क्यों ?

समाधान :- दोनों में विवक्षा का अन्तर है। पहले अगोचर कहा था वहाँ कहने का आशय यह था कि उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभाव पर्यायें हैं, समय-समय पलटती हैं, पर्याय के आश्रय से आत्मा का अनुभव होकर आगे नहीं बढ़

सकते, पर्याय में से पर्याय आती नहीं, किन्तु परमपारिणामिकभाव के आश्रय से ही निर्मलता प्रकट होती है और आगे बढ़ते हैं; अतः पर्याय के ऊपर से लक्ष छुड़ाने के लिए और शुद्धस्वभाव का लक्ष कराने के लिए उन भावों से अगम्य-अगोचर कहा था, क्योंकि वे सभी भाव पर्यायें हैं। यहाँ विचारशील, चतुर पुरुषों ने परमपारिणामिक-भाव का आश्रय लिया है और भेद का आश्रय छोड़ा है; अतः जो जीव अभेद का आश्रय लेंगे उन्हें अवश्य ही आत्मा का अनुभव होगा। इस अपेक्षा से सम्यग्दृष्टि को शुद्ध आत्मा गोचर हैं - ऐसा कहा।

मुनिराज करुणा करके कहते हैं कि शुद्धस्वभाव की रुचि कर और पर्यायबुद्धि छोड़।

यहाँ मुनिराज करुणा करके कहते हैं कि ऐसा अनादि-अनन्त एकरूप शुद्ध आत्मा पड़ा है, उसकी रुचि क्यों नहीं करता तथा पुण्य से धर्म होता है, निमित्त से कार्य होता है - ऐसी पर्यायबुद्धि की इच्छा क्यों करता है? व्यवहाररत्नत्रय का परिणाम भी दुष्कृतरूप संसार है इसलिए किसी भी शुभभाव की वाँछा तू क्यों करता है? अभिप्राय यह है कि निमित्त की, विकार की, पर्याय की रुचि छोड़ और त्रिकाली शुद्धस्वभाव की रुचिकर - इसप्रकार मुनिराज करुणाबुद्धिपूर्वक कहते हैं।

शुद्धस्वभाव की बात प्रकट प्रकाशित होने पर भी जो उसकी रुचि नहीं करता और क्रियाकाण्ड की रुचि करता है उसके जूनागढ़ के राजा की तरह दिन फिर गए हैं।

जूनागढ़ का एक राजा था। उसको एक चारण युवती तिलक करने आती है। तब राजा उसके रूप पर मोहित हो जाता है। वह कहती है कि मैं भले ही आपकी नौकरी करती हूँ, किन्तु हूँ मैं पतिव्रता और राजा की भी इच्छा नहीं करती। चारण युवती विचारती है कि ''राजा अपनी रानी को छोड़कर मुझ पर मोहित हो गया है और तिलक लगाने पर मुँह फेर लेता है, अवश्य ही राजा के दिन फिरे लगते हैं।''

उसीप्रकार शुद्धचैतन्यस्वभाव के गाने प्रकटरूप से बाहर आए हैं अर्थात् स्पष्ट और विस्तृत प्रसार-प्रचार में आए हैं। आचार्य भगवान कहते हैं कि तू अपने शुद्धस्वभाव की रुचि कर, निमित्त और पुण्य की रुचि छोड़। यह बात अनेक प्रकार के न्याय और युक्ति से प्रचार में आई है। अरे! अपने चैतन्य के स्वराज्य में सिद्धपद को देखने का, हृदय में बैठाने का समय आया है, तब जगतजन सिद्धपदरूपी लक्ष्मी का नकार करके भरपेट विरोध करते हैं और कहते हैं कि यह धर्म का स्वरूप नहीं है

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

भेदविज्ञान

प्रश्न : इष्टोपदेश में आता है कि जीव और देह को जुदा जानना ही बारह अंग का सार है- इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : जीव और देह (पुद्गल) को जुदा जाने अर्थात् विकार भी आत्मा के स्वभाव से जुदा है, यह भी उसमें गर्भित है। पुद्गल और विकार से भिन्न आत्मा के स्वभाव को जानना, अनुभव करना ही द्वादशांग का सार है। द्वादशांग में आत्मानुभूति करने को कहा गया है।

प्रश्न : भेदज्ञान का क्या अर्थ है ?

उत्तर : आत्मा उपयोगस्वरूप है, रागादि परभावों से भिन्न है - इसप्रकार उपयोग और रागादि को सर्वप्रकार से अत्यन्त भिन्न जानकर, राग से भिन्नत्वरूप और उपयोग से एकत्वरूप ज्ञान का परिणमन भेदज्ञान है।

प्रश्न : भेदज्ञानी क्या करता है ?

उत्तर : भेदज्ञानी धर्मात्मा अपने भेदज्ञान की शक्ति से निज महिमा में लीन होता है। वह रागरूप किंचितमात्र भी नहीं परिणमता, ज्ञानरूप ही रहता है।

प्रश्न : ज्ञानी को जैसे शरीर भिन्न दिखता है, वैसे रागादि भिन्न दिखते हैं क्या ?

उत्तर : ज्ञानी को रागादि शरीर के जैसे ही भिन्न दिखते हैं, अत्यन्त भिन्न दिखते है।

प्रश्न : शरीर को आत्मा से भिन्न कहा, यह तो ठीक है, जँचता भी है; परन्तु राग आत्मा से भिन्न है, यह गले उतरना कठिन लगता है ?

उत्तर : चैतन्य में अन्दर गया अर्थात् पुण्य-पापभाव का साक्षी हो गया, तब वह भाव से भिन्न है, काल से भिन्न है और क्षेत्र से भी भिन्न है; वस्तु भिन्न ही है, आत्मा तो अकेला ज्ञानघन चैतन्यपुंज ही है।

प्रश्न : सुख-दुःख की कल्पना जीव में होती हुई दिखाई देती है, तथापि समयसार में उस कल्पना को पुद्गलद्रव्य का परिणाम क्यों कहा ?

उत्तर : सुख-दु:ख, हर्ष-शोक आदि जीव की पर्याय में होते हैं, परन्तु जिसको द्रव्यदृष्टि प्रकट हुई है - ऐसे ज्ञानी जीव की दृष्टि तो द्रव्य के ऊपर पड़ी है, उसकी दृष्टि आत्मा के आनन्द में है। अत: वह जीव सुख-दु:ख की कल्पना को कैसे भोगे ? इसलिए ज्ञानी के सुख-दु:ख के राग परिणाम को पुद्गल का परिणाम कहा है और इस सुख-दु:ख के परिणाम के आदि, मध्य और अन्त में अन्तर्व्यापक होकर पुद्गलद्रव्य उसको ग्रहण करता है, भगवान आत्मा उसको ग्रहण करता अथवा भोगता नहीं है। आत्मा का स्वरूप तो ज्ञायक है, कल्पना के सुख-दु:ख को भोगना उसका स्वरूप नहीं है। पर्याय की सुख-दु:ख की कल्पना होती है; किन्तु दृष्टिवन्त ज्ञानी उसका कर्ता-भोक्ता नहीं है।

प्रश्न : धर्मात्मा रागरूप नहीं परिणमता - इसका अर्थ क्या ? उसे राग तो होता है न ?

उत्तर : राग होने पर भी उसे राग में एकत्वबुद्धि नहीं होती अर्थात् राग के साथ आत्मा की एकतारूप वह नहीं परिणमता, किन्तु राग से भिन्नपने ही परिणमता है।

प्रश्न : धर्मात्मा ज्ञानरूप ही रहता है ह्न इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : भेदज्ञानी धर्मात्मा सर्व प्रसंगों में जानता है कि ज्ञानस्वभाव ही मैं हूँ। चाहे जैसी प्रतिकूलता में घिर जाने पर भी अपने ज्ञानस्वभाव की श्रद्धा उसे कभी छूटती नहीं। इस भाँति सर्व प्रसंगों में अपने चैतन्यस्वभावरूप ही अनुभव करता रहने से धर्मात्मा ज्ञानरूप ही रहता है।

प्रश्न : धर्मात्मा ज्ञानरूप ही रहता है और रागरूप बिलकुल नहीं होता - यह किसका बल है ?

उत्तर : यह भेद-विज्ञान का बल है। भेद विज्ञान की ऐसी शक्ति है कि वह ज्ञान को ज्ञानरूप ही रखता है, उसमें किंचित् भी विपरीतता आने नहीं देता और न रागादिभावों को ही उसमें प्रविष्ट होने देता है। इसप्रकार भेदविज्ञान का बल ज्ञान और राग को परस्पर एकमेक नहीं होने देता, अपितु भिन्न ही रखता है; इसलिए भेद-विज्ञानी धर्मात्मा ज्ञानरूप ही रहता है, रागरूप नहीं होता।

प्रश्न : विकार भावों को आत्मा से अन्य क्यों कहा, जबकि वे आत्मा में ही होते हैं ?

उत्तर : आत्मा की अवस्था में जो राग-द्वेषादि विकारीभाव होते हैं, वे रूपी नहीं

हैं और अजीव में भी नहीं होते। यद्यपि वे अरूपी हैं और आत्मा की ही अवस्था में होते हैं, तथापि द्रव्यदृष्टि में उन्हें आत्मा से अन्य वस्तु कहा गया है; क्योंकि आत्मा के शुद्धस्वभाव की अपेक्षा वे विकारभाव भिन्न हैं; अत: अन्यवस्तु हैं। वे विकारभाव शुद्धात्मा के आश्रय से नहीं होते, जड़ के लक्ष से होते हैं। धर्मात्मा की दृष्टि आत्मा के शुद्धस्वभाव के ऊपर है और उस स्वभाव में से विकारभाव आते नहीं, इसलिए धर्मी उनका कर्त्ता नहीं होता। अत: उन्हें जड़ पुद्गलपरिणाम कहकर आत्मा से अन्यवस्तु कहा गया है। वे परिणाम न तो पुद्गल में होते हैं और न उन्हें कर्म ही कराते हैं, वे आत्मा की ही पर्याय में होते हैं, तथापि पर्यायबुद्धि छुड़ाने और शुद्धद्रव्य को दृष्टि कराने के लिए उन्हें आत्मा से अन्य कहा है; परन्तु उन्हें 'अन्य हैं' - ऐसा वही कह सकता है, जिसे शुद्धात्मा की दृष्टि हुई हो। अज्ञानी को तो विकार और आत्मस्वभाव की भिन्नता का भान ही नहीं है, इसलिए वह तो दोनों को एकमेक मानकर विकार का कर्त्ता होता है, विकार उसके लिए आत्मा से अन्य नहीं रहा।

प्रश्न : आत्मा में राग-द्वेष होने पर भी 'वे राग-द्वेष मैं नहीं'- ऐसा उसी समय कैसे माना जाए ? राग-द्वेष के अस्तित्व के समय ही राग-द्वेष रहित ज्ञानस्वभाव की श्रद्धा किसप्रकार हो सकती है ?

उत्तर : राग-द्वेष तो पर्याय में हैं, उसी समय यदि पर्यायदृष्टि को गौण करके स्वभावदृष्टि से देखो तो आत्मा का स्वभाव राग रहित ही है। राग होने पर भी शुद्धात्मा तो राग से रहित है। राग-द्वेष होना तो चारित्रगुण का विकारी परिणमन है और शुद्धात्मा को मानना श्रद्धागुण का तथा शुद्धात्मा को जानना ज्ञानगुण का निर्मल परिणमन है - इसप्रकार प्रत्येक गुणा का परिणमन भिन्न-भिन्न कार्य करता है।

चारित्र के परिणमन में विकारदशा होने पर भी श्रद्धा ज्ञान गुण का परिणमन उसमें न लगकर त्रिकाली शुद्धस्वभाव में बढे-झुके; श्रद्धा की पर्याय ने विकार रहित सम्पूर्ण शुद्धात्मा को लक्ष करके स्वीकार किया और ज्ञान की पर्याय भी चारित्र के विकार का नकार करके स्वभाव का लक्ष करने लगी अर्थात् उसने भी विकाररहित शुद्धात्मा को जाना।

इसप्रकार चारित्र की पर्याय में राग-द्वेष होने पर भी श्रद्धा और ज्ञान स्वलक्ष द्वारा शुद्धात्मा की श्रद्धा और ज्ञान कर सकते हैं।

समाचार दर्शन -

साप्ताहिक गोष्ठियाँ एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनाँक 14 अगस्त को **गाथा गुरुओं की** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री रमेशचंदजी तिजारिया ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ताराचंदजी सौगाणी मंचासीन थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री वर्ग से सनत जैन (प्रथम वर्ष) एवं उपाध्याय वर्ग से ईर्या जैन (प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष) को पुरस्कृत किया गया।

अन्त में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने अध्यक्ष महोदय का आभार प्रदर्शन किया। गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आशीष मड़ावरा एवं मोहित नौगांव ने किया।

2. दिनाँक 22 अगस्त को **जैन सिद्धांतों की वर्तमान में उपयोगिता है या नहीं** विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ0 पी. सी.जैन (विभागाध्यक्ष जैन अनुशीलन केन्द्र - राजस्थान विश्वविद्यालय) ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विकास जैन तृतीय वर्ष एवं अभिषेक जैन प्रथम वर्ष ने स्थान प्राप्त किया। अन्त में पण्डित सोनूजी शास्त्री ने अध्यक्ष महोदय का आभार प्रदर्शन किया। गोष्ठी का संचालन अनेकान्त जैन एवं पंकज संघई अन्तिम वर्ष ने किया।

3. दिनाँक 29 अगस्त को **दशलक्षण महापर्व : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री स्वदेशभूषणजी (निदेशक : पंजाब केसरी - दैनिक समाचार पत्र) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बालचंदजी पाटनी (अध्यक्ष - मुमुक्षु मण्डल कोलकाता) तथा श्री अखिलजी बंसल मंचासीन थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से नीशू जैन प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष एवं शास्त्री वर्ग से आकाश जैन शास्त्री द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया एवं आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

संपूर्ण कार्यक्रम ऋषिकेश जैन के संचालन एवं जयेश जैन, वीरेन्द्र जैन व भावेश जैन शास्त्री तृतीय वर्ष के संयोजकत्व में संपन्न हुये।

शोक समाचार

दिल्ली (दिलशाद गार्डन) निवासी श्रीमती अर्चना जैन धर्मपत्नी श्री नीरजजी जैन का दिनाँक 3 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं। ज्ञातव्य है कि आप श्री आदीशजी जैन दिल्ली की बहिन थीं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में –

मालवा व निमाड प्रान्त के तीर्थों की यात्रा हेतु बुकिंग प्रारंभ

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में **दिनांक 25 दिसम्बर 2010 से 31 दिसम्बर 2010** तक मालवा व निमाड प्रान्त के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा का आयोजन राष्ट्रीयस्तर पर किया जा रहा है। यात्रा दिनांक 25 दिसम्बर को इन्दौर से प्रारंभ होगी। बावनगजा में 31 दिसम्बर को रात्रि 9.00 बजे यात्रा का समापन होगा। सभी यात्रियों को 1 जनवरी को 12 बजे तक इन्दौर पहुंचा दिया जायेगा।

इस दौरान गोम्मटगिरि, इन्दौर, मक्सी, पुष्पगिरि, महावीर तपोभूमि उज्जैन, नेमावर, गंधर्वगिरी, कागदीपुरा, मांडव, मानतुंगगिरि, सिद्धवरकूट, णमोकारधाम एवं पोदनपुर सनावद, ऊन, पार्श्वगिरि, बावनगजा आदि क्षेत्रों की यात्रा का लाभ मिलेगा।

इस यात्रा में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

फार्म जमा कराने की अन्तिम तिथि 31 अक्टूबर, 2010 है; परन्तु सीटों की बुकिंग पहले आओ पहले पाओ के आधार से होगी। हमारी सीटें फुल हो जाने के बाद प्राप्त होने वाले फार्म स्वीकार नहीं किये जाएंगे। यात्रा हेतु कुल राशि 5600/- रुपये प्रति व्यक्ति रखी गई है, जिसे फार्म के साथ अग्रिम कैश या ड्राफ्ट के रूप में **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर** के नाम पर भेजने पर ही बुकिंग सुनिश्चित होगी। महाविद्यालय के पूर्व छात्रों (पत्नी सहित)को 1000/- की छूट दी जाएगी।

छह वर्ष तक के बच्चों की यात्रा नि:शुल्क रहेगी; परन्तु उसे अलग से सीट देना संभव नहीं होगा। 70 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को यात्रा में ले जाना संभव नहीं है।

यदि किसी कारणवश आप अपनी बुकिंग 10 दिसम्बर तक कैन्सिल कराते हैं तो 1500/- रुपये काटकर राशि वापिस की जायेगी। इसके उपरान्त बुकिंग कैन्सिल कराने पर कोई राशि वापिस नहीं की जा सकेगी। यदि किसी कारणवश यात्रा कमेटी आपको ले जाने में असमर्थ है तो सम्पूर्ण बुकिंग राशि वापिस कर दी जायेगी। इसकी जानकारी आपको 10 नवम्बर तक दे दी जायेगी।

आवेदक के लिये तीर्थ यात्रा कमेटी द्वारा निर्धारित नियम-शर्तें मान्य होंगी, अन्तिम निर्णय यात्रा कमेटी का होगा।

यात्रा की विशेष जानकारी हेतु जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

तेरहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक १० अक्टूबर से मंगलवार, दिनांक १९ अक्टूबर २०१० तक)

आपको सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिविरों की शृंखला में तेरहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 10 अक्टूबर से मंगलवार दिनांक 19 अक्टूबर 2010 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा।

शिविर में **'जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान'** विषय पर एक सेमिनार का भी आयोजन किया जा रहा है।

आप सभी को शिविर में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारने हेतु हमारा भाव भीना आमंत्रण है।

इस शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर व ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनाँक 16 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 32वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं दिनाँक 17 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का उत्तरप्रांतीय सम्मेलन होगा।

जयपुर महानगर फैडरेशन की मासिक पूजन संपन्न

जयपुर (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को जयपुर शहर के किसी एक मंदिर में सामूहिक पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

इसी क्रम में अगस्त माह की पूजन दिनाँक 22 अगस्त को जयपुर शहर के समीप स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बैनाड़ में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर बैनाड़ स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनालय में पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया, जिसमें फैडरेशन के लगभग 115 सदस्यों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

32वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में

(शनिवार, दिनांक 16 अक्टूबर 2010)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 32वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन शनिवार दिनांक 16 अक्टूबर 10 को आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

अधिवेशन में फैडरेशन द्वारा अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जायेगी। इस अधिवेशन में फैडरेशन की शाखाओं के सदस्य तो उपस्थित होंगे ही आप सभी आत्मार्थी महानुभाव भी इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्रों पर अवश्य देवें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र

पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल, महामंत्री **Mob. :** 9870016988,
E-Mail : parmatmb@yahoo.com
पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, संगठन मंत्री, जयपुर
Mob. : 9785643202. **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com

दशलक्षणपर्व सानन्द संपन्न

1. जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ दशलक्षण पर्व के शुभ अवसर पर ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान का आयोजन महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया। इसके पश्चात् आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन होते थे, तत्पश्चात् पण्डित रमेशचंदजी लवाणवालों द्वारा प्रवचनरत्नाकर भाग 1 के आधार से प्रवचन हुए। दोपहर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दशलक्षण धर्म पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् मुख्य प्रवचन पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा दशलक्षण धर्म पर हुए, जिसमें लगभग 200 साधर्मियों ने लाभ लिया। रात्रि में महाविद्यालय के विद्यार्थियों (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ) द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगंध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन महानगर जयपुर शाखा द्वारा सायंकाल षट्लेश्या पर आधारित एक झांकी का प्रदर्शन किया गया, जिसे देखकर जयपुर शहर के हजारों लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ पर्व पर नित्यनियम पूजन के पश्चात् ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रतिदिन धर्म के दशलक्षण एवं रात्रि में अनेकांत-स्याद्वाद एवं निश्चय-व्यवहार आधारित व्याख्यानों का 500-600 साधर्मी भाई-बहनों ने लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगंध दशमी के दिन गोम्मटेश्वर बाहुबलि की झांकी का प्रदर्शन भी किया गया।

टोडरमल महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में पाँचों कक्षाओं का परीक्षा परिणाम निम्नानुसार रहा -

प्राक्शास्त्री प्रथम में 26 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 4 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **प्राक्शास्त्री द्वितीय** में 18 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **प्रथम वर्ष** में 22 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **द्वितीय वर्ष** में 24 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी, 2 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी एवं 1 विद्यार्थी तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। **अन्तिम वर्ष** में 20 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 3 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में अध्ययनरत टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी, जिन्होंने सत्र 2010-11 में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, वे निम्नानुसार हैं -

उपाध्याय कनिष्ठ में निलयकुमार जैन, उपाध्याय वरिष्ठ में कु. अनुभूति जैन, प्रथम वर्ष में श्रुति जैन दिल्ली, द्वितीय वर्ष में जयेश जैन उदयपुर एवं तृतीय वर्ष में चिंतामणी जैन औरंगाबाद ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालय के इस श्रेष्ठ परिणाम हेतु वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 की शीतकालीन परीक्षा जनवरी 2011 के प्रवेशफार्म संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को भेजे जा चुके हैं। डाक की गड़बड़ी से जिन्हें नहीं मिले हों, वे पोस्टकार्ड द्वारा जानकारी भेजकर मंगवा लेवें।

- ओ.पी. आचार्य (विभागाध्यक्ष)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 से 19 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
21 अक्टूबर	मेरठ	प्रवचन
22 से 24 अक्टूबर	खतौली	अहिंसा सेमिनार व प्रवचन
2 नवम्बर	मंगलायतन विश्वविद्यालय	दीक्षान्त समारोह
4 से 7 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
14 व 15 नवम्बर	हेरले (कोल्हापुर)	जिनमंदिर शिलान्यास
18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
25 से 31 दिसम्बर	इन्दौर (मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी	उदयपुर	पंचकल्याणक